What is Education

Question: What is intelligence?

प्रश्न : प्रज्ञा क्या है?

Krishnamurti: What do you think is intelligence? Not what the dictionary says, not what your teacher or your books have said—leave all that aside and think and try to find out what is intelligence. Not what Buddha, Shankara, Shakespeare, Tennyson, Spencer, or somebody else has said, but what do you think is intelligence? Do you see that the moment you are asked not to think along those lines, you are stunned? Take a man who read Shankara or the communist philosophy or some other authority; he will tell you what intelligence is right off because he will quote somebody. But if you are asked not to quote, not to repeat what somebody else thinks, not merely to read in a dictionary what intelligence is, you are lost, are you not?

कृष्णमूर्ति : आप क्या सोचते हैं, प्रज्ञा क्या है? वह नहीं जो शब्दकोश में लिखा है, वह नहीं जो आपके शिक्षकों या पुस्तकों ने कहा है––उन्हें एक तरफ छोड़ दीजिए और विचार कीजिए, यह पता लगाने का प्रयत्न कीजिए कि प्रज्ञा क्या है। प्रज्ञा के बारे में बुद्ध, शंकर, शेक्सपीयर, टेनीसन या स्पेंसर या अन्य लोग क्या कहते हैं, इसको भूल जाइए और खुद सोचिए कि प्रज्ञा क्या है? आपको बड़ा आश्चर्य होता है न जब आपसे कहा जाता है कि आप औरों के अनुसार मत सोचिए? एक ऐसे व्यक्ति को लीजिए जो शंकर को पढ़ता है या साम्यवादी दर्शन को पढ़ता है अथवा किसी जाने–माने विद्वान को पढ़ता है तब वह तत्काल आपको किसी का उद्धरण देते हुए बता देगा कि प्रज्ञा क्या है, लेकिन जब आपसे यह कहा जाता है कि आप किसी का उद्धरण मत दीजिए, किसी के विचार को मत दोहराइए, किसी शब्दकोष में प्रज्ञा का अर्थ मत देखिए तब आप असहाय से हो जाते हैं। क्या ऐसा ही नहीं होता?

What do you think is intelligence? It is a very complex problem, is it not? It is very difficult in a few words to say what intelligence is. So let us begin to find out. The person who is afraid of public opinion, afraid of the teacher, afraid of what people say, afraid of losing his job, afraid of not passing an examination, is not an intelligent person; the mind that is afraid is not an intelligent mind, is it? What do you say? Is that very difficult? If I am afraid of my parents, that they may scold me, that they may do this and that, am I intelligent? I behave, I act, I think according to them because I am afraid to think freely, to act independently. So, fear prevents me, does it not, from being what I am. I am always copying, I am always following, trying to do things which other people want me to do because I am afraid. So, a mind which is imitative, which is copying because it is afraid, is not an intelligent mind, is it? What do you say?

आपकी सोच–समझ में प्रज्ञा क्या है? क्या यह बड़ा ही जटिल प्रश्न नहीं है? प्रज्ञा क्या है इसे कुछ शब्दों मे बता पाना बड़ा मुश्किल है। आइए पता लगाना आरंभ करें कि प्रज्ञा क्या है। वह व्यक्ति जो लोगों के मत से भयभीत है, शिक्षक से भयभीत है, नौकरी न छूटे इससे भयभीत है, परीक्षा में पास न होने से भयभीत है, वह बुद्धिमान नहीं है। भयभीत मन मेधावी नहीं होता। आपका क्या कहना है? क्या यह बहुत कठिन बात है? यदि मैं अपने माता–पिता से भयभीत हूं कि वे मुझे डांटेंगे, कि वे मुझे ऐसा–वैसा कहेंगे, तब क्या मैं मेधावी हूं? मैं उनकी इच्छा से व्यवहार करता हूं, कार्य करता हूं, सोचता हूं, क्योंकि मैं स्वतंत्रतापूर्वक विचार करने से डरता हूं, खुले मन से विचार करने और काम करने से डरता हूं। अतः मैं जो कुछ हूं वैसा होने से भय मुझे रोकता है। मैं हमेशा नकल करता रहता हूं, मैं सदैव अनुकरण करता रहता हूं। मैं सदैव उन चीज़ों को करने का प्रयत्न करता हूं जो दूसरे लोग मुझसे करवाना चाहते हैं क्योंकि मैं भयभीत हूं। इसलिए जो मन डर के कारण अनुकरण करता है, दूसरों की नकल करता है मेधावी नहीं होता। या होता है? आप क्या कहते हैं?

Is it not the function of education to help the student to understand these fears, to show how you are frightened of your teacher, of your parents? So that you may not say, 'As I am frightened, I will do what I like'—which is equally stupid. Education should help us to understand these fears and to be free from them. It is very, very difficult. It requires a great deal of digging, understanding, going into it. You know what 'to thaw' means. You know it freezes when the weather is very cold, and when the sunshine comes out, it begins to melt.

क्या शिक्षा का कार्य यह नहीं है कि इन भयों को समझने में छात्रों का सहयोग करे और वे देख सकें कि वे अपने शिक्षक से, अपने माता-पिता से कितने भयभीत हैं। ताकि वह यह न कह सकें, ''चूंकि मैं भयभीत हूं अतः मैं वही करूंगा जो मैं चाहता हूं''--यह कहा जाना भी उतना ही मूर्खतापूर्ण है। इन भयों को समझने एवं इनसे मुक्त होने में शिक्षा को हमारी मदद करनी चाहिए। यह बहुत, बहुत कठिन है। इसे समझने, इसकी गहराई में जाने के लिए ख़ासी जांच-पड़ताल की ज़रूरत होती है। आप जानते हैं कि 'तरल होने' का अर्थ क्या होता है? आप जानते हैं कि जब मौसम अत्यंत ठंडा हो जाता है तो पानी जमकर बर्फ हो जाता है और सूर्य के निकलने पर पिघलने लगता है।

This morning, we all feel frozen because we do not know each other. You are a little nervous because you may want to ask about something which you are ashamed of, or you may ask something which the teachers say you should not have asked, or you may be frightened of your fellow students. All that is preventing you from thawing, from feeling natural, spontaneous, easy, so that you can ask questions. I am sure you have got lots of questions bubbling inside, but you dare not ask because you are a bit apprehensive the first morning. Perhaps tomorrow the sun will have thawed us, and we shall be able to ask each other questions.

आज की सुबह हम सभी अपने को जकड़ा हुआ सा महसूस कर रहे हैं क्योंकि हम एक दूसरे से परिचित नहीं हैं। आप लोग कुछ सहमे-सहमे हैं, क्योंकि हो सकता है कि आप कुछ ऐसे प्रश्न पूछना चाह रहे हों जिन्हें पूछने में आपको शर्म आ रही हो--हो सकता है आप कुछ ऐसा पूछ बैठें जिसके लिए बाद में आपके शिक्षक शायद आपसे कहें कि आपको वह सब नहीं पूछना चाहिए था, या शायद आप अपने सहपाठियों से भयभीत हों। यह सब आपको खुलापन महसूस करने से, सहज-स्वाभाविक हो पाने से, सरल हो पाने से रोकता है जिससे कि आप कुछ पूछ सकें। मुझे यकीन है कि आपके भीतर अनेक प्रश्न उठ रहे हैं किंतु उन्हें पूछने का साहस आप नहीं जुटा पा रहे हैं क्योंकि आज की सुबह में--जो हम लोगों के परस्पर परिचय की पहली सुबह है--आप थोड़े से सशंकित हैं। शायद कल का सूरज हमें द्रवित करेगा, हममें गर्मजोशी आएगी और हम एक दूसरे से प्रश्न पूछ सकेंगे।

January 4, 1954

४ जनवरी, १९५४